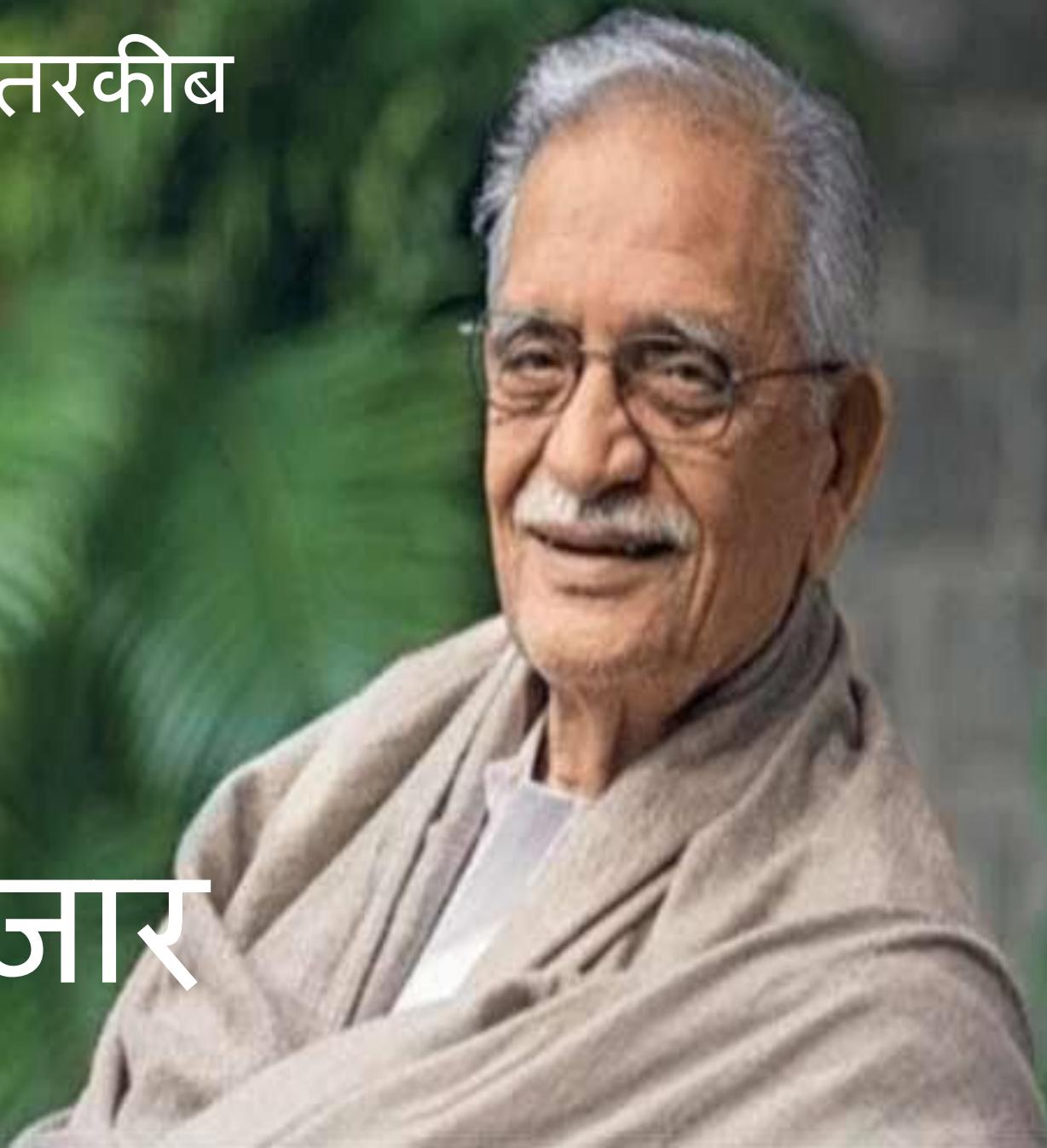
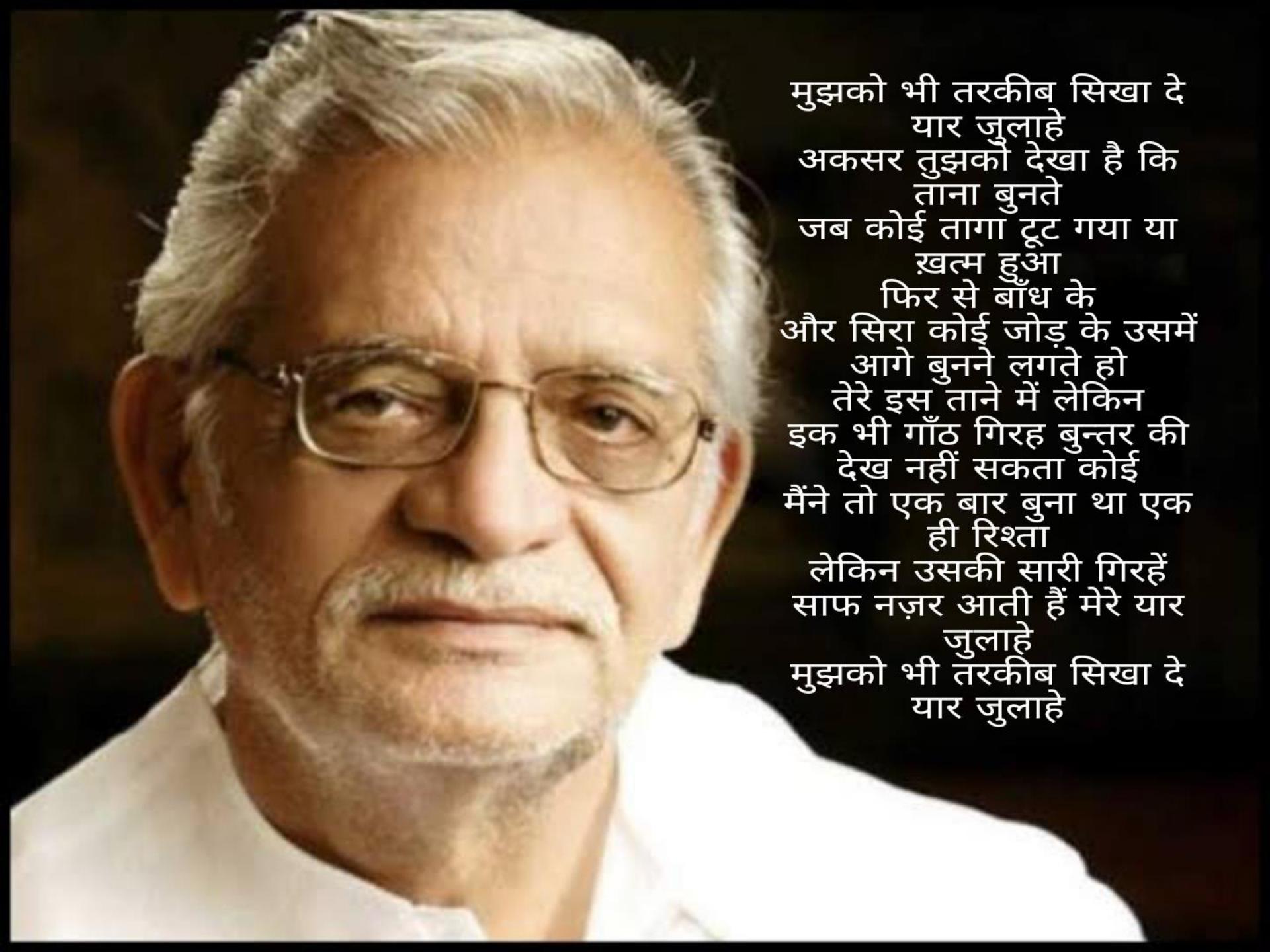


मुझको भी तरकीब
सखा...

गुलजार



A close-up portrait of Gulzar, an elderly man with white hair and a beard, wearing glasses and a white shirt. He is looking slightly to the right of the camera with a thoughtful expression.

मुझको भी तरकीब सिखा दे
यार जुलाहे
अकसर तुझको देखा है कि
ताना बुनते
जब कोई तागा टूट गया या
खत्म हुआ
फिर से बाँध के
और सिरा कोई जोड़ के उसमें
आगे बुनने लगते हो
तेरे इस ताने में लेकिन
इक भी गाँठ गिरह बुन्तर की
देख नहीं सकता कोई
मैंने तो एक बार बुना था एक
ही रिश्ता
लेकिन उसकी सारी गिरहें
साफ नज़र आती हैं मेरे यार
जुलाहे
मुझको भी तरकीब सिखा दे
यार जुलाहे

मुझको भी तरकीब सिखा कोई यार जुलाहे
अक्सर तुझको देखा है कि ताना बुनते
जब कोई तागा टूट गया या खत्म हुआ
फिर से बाँध के
और सिरा कोई जोड़ के उसमें
आगे बुनने लगते हो
तेरे इस ताने में लेकिन
इक भी गाँठ गिरह बुनतर की
देख नहीं सकता है कोई
मैंने तो इक बार बुना था एक ही रिश्ता
लेकिन उसकी सारी गिरहें
साफ़ नज़र आती हैं मेरे यार जुलाहे